पहला, दूसरा और तीसरा दिन

पहले दिन की लड़ाई में भीष्म ने पांडवों पर ऐसा आक्रमण किया कि पांडव सेना घबरा गई। दुर्योधन यह देखकर प्रसन्न था। श्रीकृष्ण पांडव सेना को धैर्य बँधा रहे थे।

पहले दिन की अपनी सेना की दुर्गति देखकर दूसरे दिन धृष्टद्युम्न ने बड़ी सतर्कता से व्यूह रचना की। कौरव-सेना में अर्जुन का मुकाबला करने वाले केवल तीन वीर-भीष्म, द्रोण और कर्ण थे। जब भीष्म ने अर्जुन पर हमला किया तो अर्जुन और भीष्म के बीच बहुत देर तक युद्ध होता रहा। धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के साथ युद्ध कर रहा था। सात्यकि के एक बाण से भीष्म का सारथी मारा गया तो घोड़े हवा से बातें करते हुए तेज़ी से भागने लगे। इससे कौरव-सेना की बहुत तबाही हुई।

तीसरे दिन के युद्ध में भीमसेन का एक बाण दुर्योधन को ऐसा लगा कि वह बेहोश होकर रथ पर गिर पड़ा। सारथी ने दुर्योधन को युद्ध भूमि से हटा लिया। इस कारण कौरव सेना में भगदड़ मच गई। दिन के पहले भाग में कौरव-सेना के तितर-बितर होने से पांडव सेना प्रसन्न थी। दूसरी ओर भीष्म ने बिखरी सेना को इकट्ठा करके ऐसा पांडव सेना पर हमला किया कि पांडव-सेना को काफी नुकसान उठाना पड़ा। भीष्म के बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्ण भी घायल हो गए। इससे क्रोधित होकर श्रीकृष्ण भीष्म को मारने दौड़े तो अर्जुन उन्हें मनाकर वापस लाया। अर्जुन ने कौरव-सेना पर भयंकर बाणों की वर्षा करके पराजित कर दिया। शाम होते ही सब अपने-अपने शिविरों को लौट लिए।

शब्दार्थ -

- अग्रभाग - आगे की ओर
- थर्रा उठना - भय से काँप उठना
- प्रतिरोध - सामना
- दंग रह जाना - आश्चर्यचकित होना
- बैरी - शत्रु
- वेग - तेज़ी
- मूर्छित - बेहोश

- पाँव उखड़ना - हार जाना
- सन्न रह जाना - चकित रह जाना